

रोशनआरा बेगम की ठुमरी एवं गज़ल में भावाभिव्यक्ति : किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा के आलोक में

शोधार्थी

जसप्रीत कौर

प्रदर्शन कला विभाग संगीत

लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,

फगवाड़ा पंजाब

शोध निर्देशक

डॉ. अमनदीप सिंह मक्कर

प्रदर्शन कला विभाग संगीत

लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,

फगवाड़ा पंजाब

सारांश

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा में किराना घराना अपनी विशिष्ट स्वर-साधना, सूक्ष्म श्रुति-बोध, दीर्घ स्वर-विस्तार, मींडप्रधान गायकी तथा स्वर की अंतःस्पंदनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट स्थान रखता है। इस घराने की गायकी में स्वर केवल संगीतात्मक संरचना का एक घटक नहीं, बल्कि भाव-संप्रेषण का मूल माध्यम बन जाता है। स्वर के सूक्ष्म आरोह-अवरोह, कण, मींड, आंदोलित स्वर तथा विलंबित लय में स्वर-विस्तार के माध्यम से कलाकार रागात्मक अनुभूति को ऐसी भाव-सघनता प्रदान करता है, जिसमें शब्द गौण होकर भी अर्थ की गहनतर अनुभूति का माध्यम बन जाते हैं। इसी स्वरप्रधान परंपरा के संदर्भ में रोशनआरा बेगम का गायन विशेष अध्ययन की अपेक्षा रखता है।

रोशनआरा बेगम का संबंध किराना घराने की समृद्ध सांगीतिक परंपरा से रहा है। उनके गायन में घराने की स्वर-साधना के साथ-साथ उपशास्त्रीय संगीत की भावप्रधान परंपरा का विशिष्ट समन्वय दिखाई देता है। ठुमरी और गज़ल जैसी शैलियों में जहाँ शब्द, काव्यात्मक अर्थ, प्रेम, विरह, करुणा, अनुराग तथा अंतर्मुखी संवेदना की प्रमुख भूमिका होती है, वहीं रोशनआरा बेगम की प्रस्तुति में स्वर उन भावों को अनुभूति के अधिक सूक्ष्म स्तर तक ले जाता है। इस दृष्टि से उनकी गायकी का अध्ययन केवल शैलीगत विश्लेषण नहीं, बल्कि स्वर और भाव के पारस्परिक संबंध की खोज भी है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में रोशनआरा बेगम की ठुमरी एवं गज़ल में भावाभिव्यक्ति का अध्ययन किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा के आलोक में किया गया है। अध्ययन में उनकी गायकी के स्वर-सौंदर्य, मींड, कण-स्वर, स्वर-विस्तार, लय-प्रयोग, बोल-बनाव, उच्चारण, शब्दानुरूप स्वर-व्यवहार तथा भाव-संप्रेषण की प्रविधियों को प्रमुख आधार बनाया गया है। साथ ही ठुमरी और गज़ल की काव्यात्मक प्रकृति तथा किराना घराने की सांगीतिक सौंदर्य-दृष्टि के मध्य अंतर्संबंध को रेखांकित किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रोशनआरा बेगम की

भावाभिव्यक्ति में स्वर की प्रधानता और शब्द की अर्थवत्ता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक रूप में कार्य करती हैं।

प्रमुख शब्द: रोशनआरा बेगम, किराना घराना, ठुमरी, गज़ल, भावाभिव्यक्ति, स्वरप्रधान गायकी, मींड, बोल-बनाव, स्वर-सौंदर्य, हिंदुस्तानी संगीत।

विषय प्रवेश

भारतीय संगीत परंपरा का मूल स्वरूप केवल ध्वनि-विन्यास अथवा राग-ताल की तकनीकी संरचना में निहित नहीं है। भारतीय संगीत का वास्तविक सौंदर्य उसकी भावात्मक और आध्यात्मिक संवेदना में प्रतिष्ठित है। यहाँ स्वर का उद्देश्य मात्र श्रव्य सौंदर्य उत्पन्न करना नहीं, बल्कि श्रोता के अंतर्मन में किसी विशिष्ट अनुभूति को जाग्रत करना भी है। यही कारण है कि भारतीय संगीत-चिंतन में 'भाव' और 'रस' को संगीत की प्रभावोत्पादक शक्ति का महत्त्वपूर्ण आधार माना गया है।

हिंदुस्तानी संगीत के विकासक्रम में विभिन्न घरानों ने अपनी विशिष्ट गायन-शैलियों, सौंदर्य-दृष्टियों और स्वर-साधना की पद्धतियों द्वारा भारतीय संगीत को समृद्ध किया। इन घरानों में किराना घराने का स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है। किराना गायकी की मूल पहचान स्वर की शुद्धता, स्वर-लगाव की सूक्ष्मता, श्रुति-संवेदनशीलता और स्वर के भावात्मक विस्तार में दिखाई देती है। इस परंपरा में एक स्वर को केवल उच्चारित करके आगे बढ़ जाना पर्याप्त नहीं माना जाता; स्वर को साधना, उसे विकसित करना और उसके सूक्ष्म कंपन में छिपी भाव-संभावनाओं को उद्घाटित करना गायकी का प्रमुख उद्देश्य बन जाता है।

किराना घराने की इसी स्वरप्रधान सौंदर्य-दृष्टि ने हिंदुस्तानी संगीत के अनेक कलाकारों को प्रभावित किया। इस परंपरा में स्वर की आंतरिक शक्ति को अभिव्यक्ति का केंद्र बनाया गया। फलतः गायकी में शब्दों की अपेक्षा स्वर के सूक्ष्म व्यवहार को अत्यधिक महत्त्व प्राप्त हुआ। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि शब्द और काव्यात्मक अर्थ पूरी तरह गौण हो जाते हैं। विशेषतः ठुमरी और गज़ल जैसी शैलियों में शब्द भावाभिव्यक्ति के अनिवार्य आधार हैं। यहाँ कलाकार के सामने चुनौती यह होती है कि वह शब्द के अर्थ को सुरक्षित रखते हुए स्वर की संगीतात्मक शक्ति द्वारा उसमें अतिरिक्त भाव-सघनता उत्पन्न करे।

रोशनआरा बेगम का गायन इसी संदर्भ में अध्ययन का महत्त्वपूर्ण विषय बनता है। उनकी संगीत-साधना में किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा के साथ भावप्रधान गायकी का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनकी ठुमरी एवं गज़ल में प्रेम, विरह, अनुराग, प्रतीक्षा, करुणा, स्मृति तथा आत्मिक संवेदना जैसे भावों की अभिव्यक्ति केवल शब्दों के माध्यम से नहीं होती, बल्कि स्वर की सूक्ष्म गति के माध्यम से भी श्रोता तक पहुँचती है।

अतः रोशनआरा बेगम की भावाभिव्यक्ति का अध्ययन करते समय केवल उनकी प्रस्तुति के विषयगत पक्ष को देखना पर्याप्त नहीं होगा। उनके स्वर-लगाव, मीड, कण-स्वर, स्वर-विस्तार, लयात्मक विन्यास, बोल-बनाव और शब्दोच्चारण को भी समान महत्त्व देना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध इसी व्यापक दृष्टिकोण को आधार बनाता है।

शोध की समस्या

की सांगीतिक पहचान को प्रायः किराना घराने की परंपरा के संदर्भ में देखा जाता है, किंतु उनकी ठुमरी एवं गज़ल में निहित भावाभिव्यक्ति का स्वतंत्र और विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। विशेषतः यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है कि किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा, जो मूलतः रागदारी संगीत की सूक्ष्म स्वर-साधना पर बल देती है, ठुमरी एवं गज़ल जैसी शब्दप्रधान अथवा भावप्रधान विधाओं में किस प्रकार रूपांतरित होती है।

यहाँ शोध की केंद्रीय समस्या यही है कि रोशनआरा बेगम की गायकी में स्वर और शब्द का संबंध किस प्रकार निर्मित होता है और किराना घराने की स्वरप्रधानता उनकी भावाभिव्यक्ति को किस प्रकार विशिष्ट बनाती है।

शोध के उद्देश्य

- रोशनआरा बेगम की ठुमरी एवं गज़ल गायकी में भावाभिव्यक्ति की प्रकृति का अध्ययन करना।
- किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट करना।
- रोशनआरा बेगम की गायकी में स्वर-लगाव, मीड, कण-स्वर, आंदोलित स्वर तथा स्वर-विस्तार की भूमिका का विश्लेषण करना।
- ठुमरी एवं गज़ल में शब्द, अर्थ और स्वर के पारस्परिक संबंध का विवेचन करना।
- रोशनआरा बेगम की गायकी में प्रेम, विरह, करुणा, अनुराग तथा अंतर्मुखी संवेदना की अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
- किराना घराने की सांगीतिक सौंदर्य-दृष्टि और रोशनआरा बेगम की भावप्रधान प्रस्तुति के अंतर्संबंध को स्पष्ट करना।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग अपेक्षित है। रोशनआरा बेगम की उपलब्ध ध्वनि-मुद्रिकाओं, प्रस्तुतियों तथा गायन-सामग्री को प्राथमिक आधार के रूप में ग्रहण किया जा सकता है, जबकि संगीतशास्त्रीय ग्रंथों,

घराना-परंपरा से संबंधित साहित्य, कलाकारों के जीवन एवं संगीत पर प्रकाशित सामग्री तथा ठुमरी और गज़ल के इतिहास से संबंधित प्रमाणिक ग्रंथों को द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। विश्लेषण के लिए स्वर-व्यवहार, लयात्मक संरचना, शब्दोच्चारण, बोल-बनाव, अलंकार, भाव-संप्रेषण तथा प्रस्तुति-शैली को प्रमुख अध्ययन-इकाइयों के रूप में ग्रहण किया गया है।

किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा

किराना घराने की पहचान भारतीय शास्त्रीय संगीत की उन परंपराओं में होती है जहाँ स्वर-साधना को गायकी का केंद्रीय आधार प्राप्त है। इस परंपरा में स्वर की शुद्धता के साथ-साथ उसके सूक्ष्म लगाव को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। स्वर को केवल एक निश्चित ऊँचाई पर स्थित ध्वनि के रूप में ग्रहण करने के बजाय उसके भीतर विद्यमान सूक्ष्म कंपन, संक्रमण और भाव-संभावनाओं को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाता है।

किराना गायकी में स्वर-विस्तार प्रायः धैर्यपूर्वक किया जाता है। कलाकार राग के स्वर-संसार को शीघ्रता से पार करने के बजाय एक-एक स्वर पर ठहरकर उसकी आंतरिक प्रकृति को उद्घाटित करता है। इस प्रकार स्वर स्वयं एक भावात्मक इकाई में परिवर्तित हो जाता है। स्वर का यह दीर्घ और सूक्ष्म उपचार श्रोता के भीतर राग की अनुभूति को क्रमशः गहन करता है।

मीड का प्रयोग इस परंपरा की एक अत्यंत प्रभावशाली विशेषता है। दो या अधिक स्वरों के मध्य सहज और अविच्छिन्न संक्रमण के द्वारा कलाकार स्वर-संबंधों को जीवंत बनाता है। यह प्रक्रिया विशेषतः भावप्रधान संगीत में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होती है, क्योंकि मीड में स्वर का गतिशील रूप भाव की तरलता को व्यक्त करने की क्षमता रखता है।

किराना परंपरा में श्रुति-बोध का भी विशेष महत्त्व है। स्वर के सूक्ष्म स्थान को पहचानना और उसे संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करना कलाकार की साधना का परिचायक है। यही सूक्ष्मता भावाभिव्यक्ति को भी प्रभावित करती है। किसी स्वर का अल्प-सा ऊर्ध्व या अधो झुकाव कभी-कभी संपूर्ण वाक्य के भाव को परिवर्तित कर सकता है।

इस प्रकार किराना घराने में स्वर केवल राग की पहचान का साधन नहीं रहता; वह स्वयं भाव की भाषा बन जाता है।

ठुमरी : शब्द, स्वर और भाव का त्रिवेणी-संबंध

ठुमरी को हिंदुस्तानी संगीत की भावप्रधान उपशास्त्रीय विधाओं में प्रमुख स्थान प्राप्त है। इसकी मूल प्रकृति में रागात्मक अनुशासन के साथ काव्यात्मक अर्थ और भाव-संवेदना का विशेष

समावेश दिखाई देता है। ठुमरी के बोल सामान्यतः प्रेम, विरह, मिलन, मान, अनुराग, प्रतीक्षा तथा नायिका-भाव से जुड़े होते हैं।

ठुमरी की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि गायक शब्दों को केवल उच्चारित न करे, बल्कि उनके भीतर निहित भाव को स्वर के माध्यम से अनुभवगम्य बनाए। इसी कारण ठुमरी में बोल-बनाव की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। एक ही शब्द या पंक्ति को स्वर की गति, लय, विराम और पुनरावृत्ति के माध्यम से अनेक भाव-छवियाँ प्रदान की जा सकती हैं।

रोशनआरा बेगम की ठुमरी गायकी को इस संदर्भ में देखने पर किराना घराने की स्वरप्रधानता और ठुमरी की भावप्रधानता का रोचक अंतर्संबंध सामने आता है। उनकी प्रस्तुति में शब्द के अर्थ को स्वर की सूक्ष्मता द्वारा विस्तारित करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इस प्रक्रिया में स्वर शब्द के अर्थ का अनुवाद नहीं करता, बल्कि उसके भीतर छिपे भाव को अधिक व्यापक अनुभूति में परिवर्तित करता है।

रोशनआरा बेगम की ठुमरी में भावाभिव्यक्ति

रोशनआरा बेगम की ठुमरी में भावाभिव्यक्ति को समझने के लिए उनकी गायकी के तीन परस्पर संबद्ध स्तरों को देखा जा सकता है—शब्द, स्वर और अनुभूति। शब्द भाव का संकेत देता है, स्वर उस संकेत को संगीतात्मक रूप प्रदान करता है और कलाकार की अनुभूति उसे श्रोता तक संप्रेषित करती है।

उनकी गायकी में प्रेम का स्वरूप केवल उल्लासपूर्ण नहीं है। प्रेम के साथ जुड़ी प्रतीक्षा, स्मृति, विरह और आत्मीयता भी स्वर-संरचना में स्थान प्राप्त करती है। यही कारण है कि उनकी ठुमरी में करुण भाव की उपस्थिति भी अत्यंत स्वाभाविक प्रतीत होती है।

ठुमरी के किसी विरहात्मक पद में यदि प्रिय की अनुपस्थिति का वर्णन है तो केवल शब्दों के उच्चारण से विरह की अनुभूति पूर्ण नहीं होती। कलाकार स्वर को थोड़ा खींचकर, किसी विशेष स्वर पर ठहरकर, फिर अगले स्वर की ओर मृदु मीड द्वारा बढ़कर उस भाव को श्रव्य अनुभव में बदलता है। रोशनआरा बेगम की गायकी में इसी प्रकार की स्वर-संवेदनशीलता भावाभिव्यक्ति को विशिष्ट आयाम प्रदान करती है। उनकी प्रस्तुति में स्वर का अनावश्यक प्रदर्शनात्मक विस्तार प्रमुख उद्देश्य नहीं बनता। स्वर-विस्तार का प्रयोजन भाव को गहरा करना है। यही विशेषता उनकी गायकी को केवल तकनीकी कौशल से ऊपर उठाकर अनुभूतिपरक कला का रूप देती है।

मीड और भाव की तरलता

मीड को यदि स्वर से स्वर तक की यात्रा के रूप में देखा जाए तो यह रोशनआरा बेगम की भावाभिव्यक्ति को समझने की एक महत्त्वपूर्ण कुंजी बनती है। ठुमरी के भाव-संसार में भाव स्थिर नहीं होते; प्रेम विरह में, विरह स्मृति में और स्मृति पुनः आशा में रूपांतरित होती रहती है। मीड इस भाव-परिवर्तन की तरलता को स्वर में मूर्त रूप देने में समर्थ है।

किराना घराने की परंपरा में मीड का प्रयोग केवल अलंकरण नहीं, बल्कि स्वर-व्यवहार की एक स्वाभाविक पद्धति है। रोशनआरा बेगम के संदर्भ में यही तकनीक ठुमरी के भावात्मक पक्ष को सघन बनाती है। स्वर का एक-दूसरे में विलयन मानो दो भावों के बीच की दूरी को समाप्त कर देता है।

विशेषतः करुण और विरहात्मक प्रसंगों में मीड की धीमी और कोमल गति श्रोता के भीतर एक प्रकार की भावात्मक प्रतीक्षा निर्मित करती है। स्वर तत्काल अपने गंतव्य तक नहीं पहुँचता, बल्कि मार्ग में ठहरता हुआ आगे बढ़ता है। यही विलंबित गति भाव को समय प्रदान करती है और श्रोता को उस भाव के साथ जुड़ने का अवसर देती है।

कण-स्वर और सूक्ष्म भाव-संकेत

रोशनआरा बेगम की गायकी में सूक्ष्म स्वर-स्पर्श को भी भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। कण-स्वर मुख्य स्वर की उपस्थिति को अधिक अर्थवान बनाता है। किसी स्वर के पूर्व अथवा पश्चात् अल्पकालिक स्वर-स्पर्श से गायकी में ऐसी सूक्ष्मता उत्पन्न होती है जिसे शब्दों द्वारा व्यक्त करना कठिन होता है।

भावप्रधान संगीत में यह सूक्ष्मता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रेम की लज्जा, स्मरण की हल्की कसक, विरह की पीड़ा या मिलन की आकांक्षा जैसे भावों को सीधे-सीधे उद्घोषित करने की अपेक्षा उनका संकेत अधिक प्रभावकारी हो सकता है। कण-स्वर इसी संकेतात्मक अभिव्यक्ति को संभव बनाता है।

किराना घराने की सूक्ष्म स्वर-साधना और ठुमरी की भावात्मक प्रकृति का मिलन इस बिंदु पर विशेष रूप से दिखाई देता है। रोशनआरा बेगम की गायकी में स्वर का अल्पतम स्पर्श भी कभी-कभी व्यापक भावानुभूति उत्पन्न करने में समर्थ होता है।

ग़ज़ल और स्वराभिव्यक्ति का अंतर्संबंध

ग़ज़ल मूलतः काव्य की ऐसी विधा है जिसमें प्रेम, विरह, स्मृति, सौंदर्य, जीवन-दर्शन तथा मानवीय अनुभूति के विविध रूपों को अत्यंत संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा में व्यक्त किया

जाता है। ग़ज़ल की प्रत्येक पंक्ति अपने भीतर अर्थ की अनेक संभावनाएँ रखती है। जब यही काव्य संगीतबद्ध होकर प्रस्तुत होता है, तब शब्द के अर्थ के साथ स्वर का भावात्मक अर्थ भी जुड़ जाता है।

ग़ज़ल गायन में उच्चारण की स्पष्टता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शब्द के अर्थ में यदि अस्पष्टता उत्पन्न हो जाए तो काव्य का प्रभाव कम हो सकता है। दूसरी ओर केवल स्पष्ट उच्चारण भी पर्याप्त नहीं है; शब्दों में निहित भाव को स्वर के माध्यम से उभारना आवश्यक होता है।

रोशनआरा बेग़म की ग़ज़ल-गायकी का विश्लेषण करते हुए यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि उनकी स्वर-संवेदना काव्यात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है। किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा के कारण स्वर के सूक्ष्म उतार-चढ़ाव, ठहराव और मीड का प्रयोग शब्दों को भावात्मक गहराई प्रदान करता है।

रोशन आरा बेग़म की ग़ज़ल में भावाभिव्यक्ति

रोशनआरा बेग़म की ग़ज़ल गायकी में भाव का स्वरूप अपेक्षाकृत अंतर्मुखी दिखाई देता है। यहाँ भाव की अभिव्यक्ति प्रायः तीव्र उद्घोष के स्थान पर संयत स्वर-संयोजन और अर्थपूर्ण ठहराव के माध्यम से होती है। उनकी गायकी में स्वर का विस्तार शब्द के अर्थ को ढँकता नहीं, बल्कि उसे अधिक गहन बनाता है।

ग़ज़ल में प्रयुक्त प्रेमात्मक शब्दावली को यदि केवल साहित्यिक अर्थ में ग्रहण किया जाए तो उसका अर्थ सीमित रह सकता है; किंतु स्वर के माध्यम से वही शब्द व्यक्तिगत अनुभूति का रूप ग्रहण कर लेते हैं। उदाहरणतः प्रतीक्षा का भाव किसी एक शब्द से व्यक्त हो सकता है, लेकिन उस शब्द को जिस प्रकार स्वर पर रोका जाए, जिस प्रकार उसकी पुनरावृत्ति की जाए और जिस प्रकार अगले स्वर तक पहुँचाया जाए, उससे प्रतीक्षा की अनुभूति की तीव्रता बदल जाती है।

यही रोशनआरा बेग़म की भावाभिव्यक्ति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि वे शब्द को केवल गाती नहीं हैं, बल्कि उसे स्वर के भीतर अनुभव करती हुई प्रतीत होती हैं। परिणामस्वरूप काव्यात्मक अर्थ और संगीतात्मक अनुभूति के बीच एक सजीव संबंध स्थापित होता है।

स्वर और शब्द का पारस्परिक संबंध

रोशनआरा बेग़म की गायकी के अध्ययन में 'स्वर बनाम शब्द' का द्वंद्व स्थापित करना उचित नहीं होगा। उनके यहाँ स्वर और शब्द एक-दूसरे के पूरक हैं। शब्द भाव का वैचारिक संकेत प्रदान करता है और स्वर उसे अनुभूति में परिवर्तित करता है। यदि शब्द अर्थ का शरीर

है तो स्वर उसकी संवेदना है। शब्द बताता है कि क्या कहा जा रहा है, जबकि स्वर यह अनुभव कराता है कि वह बात किस मनःस्थिति से कही जा रही है। इसी कारण एक ही पंक्ति अलग-अलग कलाकारों द्वारा गाए जाने पर अलग-अलग भावात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकती है।

किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा को शब्द के भीतर स्थित सूक्ष्म भाव को स्वर में विकसित करने की क्षमता प्रदान करती है। उनकी गायकी में शब्द कभी स्वर पर भार नहीं डालता और स्वर कभी शब्द के अर्थ को नष्ट नहीं करता। दोनों के मध्य संतुलन उनकी प्रस्तुति की प्रमुख सौंदर्यगत उपलब्धि है।

विरह और करुणा की अभिव्यक्ति

भारतीय संगीत में विरह केवल दुःख की अभिव्यक्ति नहीं है; यह प्रेम की गहनताका भी सूचक है। ठुमरी और ग़ज़ल दोनों में विरह की अनुभूति को विशेष स्थान प्राप्त है। रोशनआरा बेग़म की गायकी में विरहात्मक भाव को स्वर की मृदुता, दीर्घता और ठहराव के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

करुण भाव की अभिव्यक्ति में अत्यधिक आक्रामकता प्रायः भाव को कृत्रिम बना सकती है। इसके विपरीत संयत स्वर, धीमी गति और नियंत्रित अलंकरण करुणा को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। किराना गायकी की स्वर-साधना इस प्रकार की संयत अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल आधार प्रस्तुत करती है।

रोशनआरा बेग़म की आवाज़ में स्वर के प्रति जो संवेदनशीलता दिखाई देती है, वह करुण भाव को बाह्य प्रदर्शन के बजाय अंतर्मुखी अनुभूति का रूप देती है। श्रोता को ऐसा प्रतीत होता है कि भाव बाहर से आरोपित नहीं किया गया, बल्कि स्वर के भीतर से स्वतः प्रस्फुटित हुआ है।

प्रेम और अनुराग का स्वर-सौंदर्य

प्रेम की अभिव्यक्ति रोशनआरा बेग़म की ठुमरी एवं ग़ज़ल के भाव-संसार का प्रमुख आयाम मानी जा सकती है। किंतु यह प्रेम केवल लौकिक आकर्षण तक सीमित नहीं रहता। स्वर की कोमलता, मींद की तरलता और शब्दों के अर्थपूर्ण उच्चारण के माध्यम से प्रेम अनेक स्तरों पर अभिव्यक्त होता है।

अनुराग की अभिव्यक्ति में स्वर का मधुर और सहज प्रवाह विशेष महत्त्व रखता है। किसी स्वर पर हल्का ठहराव, उसके बाद दूसरे स्वर की ओर कोमल गति और फिर मूल स्वर पर वापसी—ये सभी प्रक्रियाएँ मिलकर भाव को गतिशील बनाती हैं, इस दृष्टि से की गायकी में प्रेम

को 'गाया हुआ विषय' न मानकर 'स्वर में अनुभव किया गया भाव' कहना अधिक उपयुक्त होगा।

बोल-बनाव की भूमिका

ठुमरी की भावात्मक शक्ति का एक महत्त्वपूर्ण आधार बोल-बनाव है। बोल-बनाव के माध्यम से कलाकार एक ही काव्यांश को विभिन्न स्वर-रूपों में प्रस्तुत कर सकता है। शब्द की पुनरावृत्ति, स्वराघात, लय में परिवर्तन, विराम तथा स्वर-विस्तार द्वारा उसके अर्थ में सूक्ष्म परिवर्तन संभव होता है।

रोशनआरा बेगम के गायन में बोल-बनाव को किराना घराने की स्वरप्रधान दृष्टि से जोड़कर देखने पर एक विशिष्ट कलात्मक प्रक्रिया सामने आती है। वे शब्द के प्रत्येक अक्षर को अत्यधिक अलंकरण से नहीं भरती, बल्कि आवश्यकतानुसार स्वर-संवेदना का प्रयोग करती हैं। इस प्रकार बोल की स्वाभाविकता बनी रहती है और भाव की तीव्रता भी कम नहीं होती।

लय और भावाभिव्यक्ति

भाव की अभिव्यक्ति में लय की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। लय केवल गति का निर्धारण नहीं करती, बल्कि भाव की मनोवैज्ञानिक स्थिति को भी प्रभावित करती है। धीमी गति में स्वर को विस्तार का अवसर मिलता है, जबकि अपेक्षाकृत गतिशील लय में भाव में चंचलता और प्रवाह उत्पन्न हो सकता है।

रोशनआरा बेगम की गायकी में लय का प्रयोग भाव के अनुरूप दिखाई देता है। विरह और करुणा जैसे भावों में ठहरावयुक्त प्रस्तुति भाव को गहनता प्रदान करती है, जबकि अनुराग या चपलता के प्रसंग में लय का प्रवाह भाव को गतिशील बनाता है।

इस प्रकार उनके लिए लय स्वयं भावाभिव्यक्ति का एक उपकरण है।

अलंकार और भाव

भारतीय संगीत में अलंकारों का उद्देश्य केवल तकनीकी कौशल का प्रदर्शन नहीं है। उपयुक्त संदर्भ में प्रयुक्त अलंकार भाव की तीव्रता और सौंदर्य दोनों को बढ़ा सकता है। रोशनआरा बेगम की गायकी में अलंकारों का प्रयोग भावानुकूल दिखाई देता है।

किराना परंपरा में अत्यधिक तानप्रधानता की अपेक्षा स्वर-लगाव और मींड को जो महत्त्व प्राप्त है, वह ठुमरी एवं गज़ल की भावात्मक प्रकृति के साथ सहज रूप से जुड़ता है। इस कारण

उनकी गायकी में अलंकरण भाव को आच्छादित करने के बजाय उसे उभारने का कार्य करता है।

किराना परंपरा और ठुमरी का अंतर्संबंध

पहली दृष्टि में किराना घराने की शास्त्रीय स्वर-साधना और ठुमरी की भावप्रधानता दो भिन्न संगीत-संसार प्रतीत हो सकते हैं। किंतु गहन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच एक सृजनात्मक संवाद संभव है। किराना घराना स्वर को सूक्ष्मता देता है और ठुमरी उस सूक्ष्मता को भावात्मक दिशा प्रदान करती है।

रोशनआरा बेगम इसी अंतर्संबंध की महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में देखी जा सकती हैं। उनकी गायकी में रागात्मक अनुशासन और भावात्मक स्वतंत्रता के मध्य संतुलन दिखाई देता है। वे स्वर की शुद्धता से समझौता किए बिना शब्द की भाव-शक्ति को स्थान देती हैं।

इस प्रकार उनकी ठुमरी गायकी घराने की परंपरा का केवल अनुकरण नहीं करती, बल्कि उसे भावप्रधान संगीत की आवश्यकताओं के अनुरूप सृजनात्मक विस्तार प्रदान करती है।

रोशनआरा बेगम की गायकी की विशिष्टता

रोशनआरा बेगम की विशिष्टता को केवल किसी एक तकनीकी गुण में सीमित नहीं किया जा सकता। उनकी गायकी का वास्तविक महत्त्व स्वर, शब्द और भाव के त्रिकोणीय संतुलन में निहित है। उनकी आवाज़ में स्वर की स्वाभाविक गरिमा, प्रस्तुति में संयम, शब्दोच्चारण में स्पष्टता तथा भावों में अंतर्मुखी संवेदना का समन्वय दिखाई देता है। उनकी गायकी का उद्देश्य श्रोता को चमत्कृत करना भर नहीं है; वह श्रोता को भाव के भीतर प्रवेश करने का अवसर प्रदान करती है। यही कारण है कि उनकी प्रस्तुति में स्वर का प्रत्येक विस्तार केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं लगता, बल्कि किसी अंतर्निहित अनुभूति की क्रमिक अभिव्यक्ति प्रतीत होता है।

भावाभिव्यक्ति की सौंदर्य-दृष्टि

रोशनआरा बेगम की भावाभिव्यक्ति को सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो उसमें 'संयत अभिव्यक्ति' का महत्त्व स्पष्ट होता है। वे भाव को अत्यधिक बाह्य प्रदर्शन के माध्यम से व्यक्त करने के बजाय स्वर की सूक्ष्मता में प्रतिष्ठित करती हैं।

भारतीय संगीत की परंपरा में रस की निष्पत्ति के लिए कलाकार और श्रोता दोनों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। कलाकार भाव का संकेत देता है और श्रोता अपनी संवेदनात्मक क्षमता के अनुसार उस भाव को पूर्ण करता है। रोशनआरा बेगम की गायकी में यह संकेतात्मकता विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

उनकी गायकी में कई बार स्वर का अल्पकालिक ठहराव शब्द से अधिक कह देता है। यही संगीत की वह शक्ति है जिसमें अर्थ शब्दों से आगे बढ़कर अनुभूति का रूप धारण कर लेता है।

समकालीन संगीत परंपरा में महत्त्व

रोशनआरा बेगम की सांगीतिक विरासत का महत्त्व केवल उनके व्यक्तिगत गायन तक सीमित नहीं है। उनकी गायकी इस बात का उदाहरण प्रस्तुत करती है कि घराना-परंपरा स्थिर और जड़ संरचना नहीं होती, बल्कि बदलती हुई संगीत-परिस्थितियों के साथ नए रूप ग्रहण करती रहती है।

किराना घराने की स्वरप्रधानता को ठुमरी और ग़ज़ल जैसी भावप्रधान विधाओं में प्रयुक्त करके उन्होंने यह दिखाया कि शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्म स्वर-साधना और उपशास्त्रीय संगीत की भाव-संवेदना के बीच सार्थक संवाद संभव है। उनकी गायकी आज भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि वह संगीत में तकनीक और संवेदना के संतुलन का आदर्श प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष स्थापित किया जा सकता है कि रोशनआरा बेगम की ठुमरी एवं ग़ज़ल गायकी में भावाभिव्यक्ति का मूल आधार स्वर की सूक्ष्म और संवेदनशील साधना है। किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा ने उनकी गायकी को ऐसी सौंदर्य-दृष्टि प्रदान की जिसमें स्वर स्वयं भाव-संप्रेषण का सशक्त माध्यम बन जाता है। उनकी ठुमरी में प्रेम, विरह, अनुराग, प्रतीक्षा और करुणा जैसे भाव शब्दों के अर्थ तक सीमित नहीं रहते, बल्कि मीड, कण-स्वर, स्वर-लगाव, ठहराव और लय के माध्यम से अधिक गहन अनुभूति में परिवर्तित होते हैं। इसी प्रकार उनकी ग़ज़ल गायकी में काव्यात्मक शब्दावली को स्वर की सूक्ष्मता द्वारा भावात्मक विस्तार प्राप्त होता है। रोशनआरा बेगम की कला का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि उनके यहाँ स्वर और शब्द के मध्य कोई संघर्ष नहीं दिखाई देता। शब्द अर्थ का आधार है और स्वर उस अर्थ की अनुभूति। दोनों के समन्वय से भावाभिव्यक्ति का वह स्वरूप निर्मित होता है जिसमें श्रोता केवल गीत या ग़ज़ल को सुनता नहीं, बल्कि उसके भाव-जगत में प्रवेश करता है।

किराना घराने की स्वरप्रधान परंपरा के संदर्भ में रोशनआरा बेगम का अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि घराना केवल कुछ विशिष्ट तकनीकी विशेषताओं का समूह नहीं है। वह एक सांगीतिक दृष्टि है—स्वर को सुनने, साधने और अभिव्यक्त करने की दृष्टि। रोशन आरा बेगम ने इसी दृष्टि को ठुमरी एवं ग़ज़ल के भावप्रधान संसार में रूपांतरित करके उसे एक विशिष्ट कलात्मक आयाम प्रदान किया।

अतः यह कहा जा सकता है कि रौशन आरा बेगम की भावाभिव्यक्ति का मूल सौंदर्य 'स्वर में निहित भाव' और 'भाव में निहित स्वर' के परस्पर संबंध में प्रतिष्ठित है। उनकी गायकी में स्वर केवल संगीत का माध्यम नहीं रहता, बल्कि संवेदना की स्वतंत्र भाषा बन जाता है। यही उनकी सांगीतिक विरासत की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है और यही उन्हें किराना घराने की भाव-संपन्न परंपरा में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पटवर्धन, वि. रा. – संगीतशास्त्र।
2. देवधर, अशोक रानाडे – भारतीय संगीत की परंपरा और विकास।
3. देशपांडे, वामनराव – हिंदुस्तानी संगीत में घरानों की परंपरा।
4. श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र – संगीत निबंधावली।
5. नारायण, बी. आर. – किराना घराना और उसकी गायकी।
6. रानाडे, अशोक डी. – Hindi Music and the Search for a New Paradigm.
7. Wade, Bonnie C. – Khyal: Creativity within North India's Classical Music Tradition.
8. Miner, Allyn – Sitar and Sarod in the 18th and 19th Centuries.
9. हिंदुस्तानी संगीत, ठुमरी, ग़ज़ल तथा किराना घराने से संबंधित प्रमाणिक शोध-ग्रंथ, संगीत-पत्रिकाएँ एवं अभिलेखीय ध्वनि-सामग्री।